मिथिला सांस्कृतिक परिषद और साहित्य अकादमी का मैथिली लोकगीत और लोकगाथा पर विमर्श शुरू

पहले दिन मैथिली साहित्य पर प्रस्तुत किए गए 8 शोध आलेख

जमशेदपुर : मिथिला सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुर और साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में मैथिली लोकगीत और लोकगाथा विचार-विमर्श की शुरुआत हुई. इस मौके पर उपस्थित साहित्य अकादमी से जुड़े भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के उप सचिव डॉ. एन सुरेश बाबु ने कहा कि लोक साहित्य ही आमजनों का साहित्य है, जो अपने समकालीन समाज का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता है. मुख्य अतिथि उत्पाद आयुक्त अरुण कुमार मिश्र ने लोकगाथा और लोकगीतों को संरक्षित करने की जरूरत बताई. प्रख्यात साहित्यकार डॉ ओम प्रकाश भारती ने 134 लोकगाथाओं का जिक्र करते हुए कहा कि लोकगीतों और लोकगाथाओं का वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और समाज शास्त्रीय ढंग से अध्ययन की जरूरत है. इस दौरान आलेख सत्र में डॉ अशोक अविचल की अध्यक्षता में

आठ शोध आलेख प्रस्तुत किया गया. पहले दिन कुमार मनीष अरविन्द, शिव कुमार झा टुल्लू, रुपम झा, अशोक झा, सियाराम झा सरस, डॉ रवींद्र कुमार चौधरी ने मैथिली लोक साहित्य में पर्यावरण विमर्श, शिष्ट साहित्यिक आधार रुप में मैथिली लोक साहित्य का महत्व, जनजीवन में मैथिली लोकगीतक महत्व, मैथिली लोक गाथा में चित्रित समाज, दूसरे सत्र में मैथिली लोकगाथा में वर्णित समतामूलक अवधारणा, मैथिली लोकगाथा में वर्णित प्रेम का स्वरूप, मैथिली लोकगाथा के भौगोलिक परिक्षेत्र आदि विषयों पर साहित्यकारों के द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया. संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ विधा नाथ झा विदित ने की जबकि विषय परवर्तन साहित्य अकादमी के मैथिली संयोजक डॉ अशोक कुमार झा अविचल ने किया. मंच संचालन महासचिव सुजीत कुमार झा और अध्यक्ष शिशिर कुमार झा ने धन्यवाद ज्ञापन किया.